ईश्वरीय राज्य

फ्रैंकलीन द्वारा

परमेश्वर के राज्य पर एक परिचयात्मक अध्ययन

आइये मैं राज्य के राजा से आपका परिचय करवाता हूँ

हमारा **प्रभु यीशु मसीह**, जो धन्य और सर्वोच्च है, वह **राजाओं का राजा** और **प्रभुओं का प्रभु है, केवल उसी के पास अमरता है** और **वह अगम्य ज्योति में वास करता है**, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं देखा और न देख सकता है। आदर और अनंत राज्य उसी का हो! आमीन।।

वही सब वस्तुओं में प्रथम है कुलुस्सियों 1:16-17

- इसलिए वह कहीं से नहीं आया क्योंकि उसके आने का कोई स्थान और वस्तु नहीं थी।

उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई कुलुस्सियों 1:16-17

- उसके कहे हुए शब्दों के सामर्थ्य और अधिकार के द्वारा

सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं कुलुस्सियों 1:16-17

- वह ऐसा परमाणुवीय चुम्बक है जो सब अणुओं को और अन्य सब बातों को एक साथ स्थिरता से थामे रखता है

फिलिप्पियों 2:6-11

जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।

- हमारा प्रभु यीशु मसीह पिता परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव की समानता में था।

वरन् अपने आप को ऐसा **शून्य** कर दिया, और **दास** का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

- वह अपना पद, अपना सिंहासन छोड़कर स्वर्ग से नीचे उतर आया। उसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को **छोड़**, सब कुछ त्याग दिया।

और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को **दीन किया**, और यहाँ तक **आज्ञाकारी रहा** कि **मृत्यु**, हाँ, **क्रूस की मृत्यु** भी सह ली।

- क्योंकि वह खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। लूका 19:10
- जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। 2 कुरिन्थियों 5:21

इस कारण **परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया**, और उसको **वह नाम** दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब **यीशु के नाम पर घुटना टेकें;** और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये **हर एक जीभ अंगीकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।**

परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया और परमेश्वर ने पुत्र के लिये एक राज्य ठहराया है लूका 22:29

- इब्रानियों 1:8 परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, "**हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन** युगानुयुग रहेगा : **तेरे राज्य** का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।

दानिय्येल 7:13-14 मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान–सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको **ऐसी प्रभुता, महिमा** और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; **उसकी प्रभुता सदा तक अटल**, और **उसका राज्य अविनाशी** ठहरा।

प्रकशितवाक्य 19:11-16 फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो **विश्वासयोग्य** और **सत्य** कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है। उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। वह लहू छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम **परमेश्वर का वचन है।** स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है : **"राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।"**

दानिय्येल 2:44 उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, **एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा,** और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और **वह सदा स्थिर रहेगा।**

दानिय्येल 7:18 परन्तु **परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएँगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।**

परमेश्वर का राज्य क्या है?

क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और मेलमिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।

रोमियों 14:17

- धार्मिकता (पाप के बिना)
    - धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है। भजन 23:3
- शान्ति
    - वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है भजन 23:2
- आनंद
    - तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है भजन 16:11

हम राज्य में कैसे प्रवेश करते हैं?

1. दो जन्म ज़रूरी हैं :
    - John 3:5-6 "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल (स्वभाविक जन्म) और आत्मा (आत्मिक जन्म) से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ⁶क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर (स्वभाविक जन्म) है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा (आत्मिक जन्म) है।

2. अपने स्वर्गीय पिता पर बच्चे के सामान विश्वास और भरोसा।
   आप यह मानते हैं कि जो कुछ भी वह कहता है वह सच है, और उससे किसी वस्तु और किसी व्यक्ति की तुलना नहीं की जा सकती। वह सब लोगों से अधिक बलशाली है। जब वह आपको हवा में ऊपर फेंकता है तो आपको डरने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह हमेशा आपको पकड़ लेगा। कोई भी आपसे इतना प्रेम नहीं रखता जितना आपका परमेश्वर आपसे रखता है।

   - लूका 18:17 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।"

अगला प्रश्न है : परमेश्वर के राज्य में कैसे रहें?

राज्य में रहना

मत्ती 6:33 **पहले** तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की **खोज** (या इच्छा) **करो* तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।**

आदेशात्मक क्रिया – एक आज्ञा

मुझे धर्म की "इच्छा" करो, उचित अनुवाद लगता है। हमारा पिता चाहता है कि हम किसी और बात से बढ़कर उसके राज्य की "इच्छा" करें।

"खोज" से ऐसा प्रतीत होता है मानो राज्य हमसे छिपा हुआ हो।

वह छिपा नहीं है, वह तुम्हारे बीच में है (लूका 17:21)

यदि तुम उसकी इच्छा करो -> तो तुम उसे खोज पाओगे।

- वह क्या है जो हमें खोजना है?? परमेश्वर का राज्य क्या है??
- इसका छोटा सा उत्तर हमें तब मिलता है जब यीशु ने हमें बताया कि कैसे प्रार्थना करनी चाहिए:

मत्ती 6:9-10 "अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो : 'हे हमारे **पिता**, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।[10]**तेरा राज्य आए।** [कैसे] **तेरी इच्छा** जैसी स्वर्ग में **पूरी होती है**, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

- उसका राज्य तब आएगा और होगा -> जब उसकी इच्छा पूरी होगी -> जब उसकी आज्ञा मानी जाएगी ... जैसी स्वर्ग में पूरी होती है।

- जब हम उद्धारकर्ता के रूप में उस पर **विश्वास** और भरोसा रखते हैं और **प्रभु** के रूप में उसकी **आज्ञा मानते हैं**, तो

  1 यूहन्ना 3:22-23 जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है, क्योंकि (1) हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और (2) जो उसे भाता है वही करते हैं। उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें, और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें।

लूका 12:32 "हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि **तुम्हारे पिता** को **यह भाया है**, कि **तुम्हें राज्य दे**। यदि आपको वास्तव में वह चाहिए!

- वह अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। इब्रानियों 11:6

यह उसको भावता है कि वह आपको राज्य की भली वस्तुएं दे:

- ❖ कपड़ा, भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य
- ❖ आशिष और सुख-समृद्धि
- ❖ स्वतंत्रता और छुटकारा
- ❖ अधिकार और सामर्थ्य
- ❖ आनंद और शान्ति और बहुत कुछ

सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आपने कभी लिया, वह यीशु मसीह पर विश्वास करने और उसे ग्रहण करने का था।

जब आप विश्वास करते हैं, तो बहुत सी बातें होती है :

#1 नया जन्म

1 पतरस 1:23 क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा **नया जन्म** पाया है।

#2 मृत्यु से निकाले गए और जीवन में पहुंचाए गए

यूहन्ना 5:24 मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर **विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है;** और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह **मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।**

#3 प्राथमिकताएं – सोचने और कार्यों में बदलाव

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिये यदि कोई मसीह में है तो **वह नई सृष्टि है;** पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

#4 नया हृदय – नया नाम – नई आत्मा प्राप्त करना

यहेजकेल 36:26 मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा

यशायाह 65:15 परन्तु अपने दासों का दूसरा नाम रखेगा।

प्रकाशितवाक्य 2:17 मैं उसे ... एक नाम लिखा हुआ दूंगा...

#5 **उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर** अपने प्रिय पुत्र के **राज्य में प्रवेश कराया**

कुलुस्सियों 1:13-14

- हमारे भीतर **नया** अर्थात नए सिरे से जन्मे **व्यक्तित्व** को राज्य में **प्रवेश कराया** जाता है।
  यह ऐसा है : **नये मनुष्यत्व** को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की **धार्मिकता** और **पवित्रता** में सृजा गया है। इफिसियों 4:24

अपने अनंत दृष्टिकोण से परमेश्वर, हम सब को जीवित और हमारे पुराने पापी स्वभाव को मरे हुए देखता है :

तुम मरे हुए थे (इफि.2:1)। जब तुम मसीह में आए, तो उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिससे **शारीरिक देह उतार दी जाती है,**[12]और **उसी के साथ** बपतिस्मा **में गाड़े गए** [हमारा पुराना मनुष्यत्व और वह गाड़ा जाता है] और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, **उसके साथ** [हमारा नए सिरे से जन्मा मनुष्यत्व] **जी भी उठे।** कुलुस्सियों 2:11-12।

अतः प्रभु परमेश्वर हमें इस प्रकार देखता है -> हमारा "पुराना मनुष्यत्व" जो मर गया और गाड़ दिया गया -> और हमारा नया "नए सिरे से जन्मा मनुष्यत्व" जो नए जीवन के लिए जिलाया गया -> विश्वासी का अनंत जीवन सुनिश्चित है, जो निश्चय है।

परन्तु अब, हमारा "पुराना मनुष्यत्व" अभी भी हमारे साथ है। यह एक समस्या है, एक बड़ी समस्या।

लेकिन हमसे कहा गया: तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो*।[हम जो हैं वह रहें] 12इसलिये **पाप तुम्हारे** नश्वर शरीर में **राज्य न करे**, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो;13और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से **जी उठा** हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो।14तब तुम पर पाप की **प्रभुता** न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।
रोमियों 6:8-14 आदेशात्मक – एक आज्ञा

- पुराना मृत और पापी स्वभाव राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
- आत्मा द्वारा चलने का अर्थ -> राज्य में चलना है
- जब हम अपने शरीर द्वारा चलते हैं -> तो हम इस संसार के राज्य में चलते हैं, जो शैतान को अवसर प्रदान करता है।
- अतः यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि हम "अपने क्रूस को उठाएं और अपने पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ा दें। यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और **प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए** मेरे पीछे हो ले। लूका 9:23-24

केवल नया मनुष्यत्व ही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है क्योंकि उसे धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। इफि. 4:24

नया जन्म पाने के बाद हमारे आचरण को निर्धारित करने के लिए **हमारे पास दो स्वभाव** या चरित्र होते हैं, एक नहीं!

- "**पुराना मनुष्यत्व**" – पुराना स्वभाव
    - ✓ स्वयं के लिए जीता है
    - ✓ शरीर द्वारा नियंत्रित होता है
    - ✓ लालसा से प्रेरित होता है
    - ✓ पाप को "हाँ" कहने वाला होता है

- "नया मनुष्यत्व" – नया मनुष्य
    - ✓ दूसरों के लिए जीता है
    - ✓ आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है
    - ✓ प्रेम से प्रेरित होता है
    - ✓ प्रभु को "हाँ" कहने वाला होता है

शुभ सन्देश यह है: शैतान "नए मनुष्य" को छू नहीं सकता

- याकूब 4:6-7 ... इसलिये परमेश्वर के **अधीन हो जाओ**; और शैतान का **सामना करो**, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।
- 1 यूहन्ना 5:18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है ("नया मनुष्य"), वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ (यीशु), उसे **वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।**

- नीतिवचन 1:33 परन्तु **जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा,** और **बेखटके सुख से रहेगा।"**

बुरा समाचार यह है: शैतान "पुराने पापी मनुष्यत्व" पर हमला कर सकता है

- **ऐसे कौन से पाप थे जिन्होंने शैतान को अवसर दिए?**

इफिसियों 4:17-32 इसलिये मैं यह कहता हूँ और प्रभु में आग्रह करता हूँ कि [1] जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की **अनर्थ रीति** पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।(18) क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं;(19) और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि **सब प्रकार के** गन्दे काम लालसा से किया करें। (20) पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। (21) वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी और, जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए (22) कि तुम **पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व** को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो (23) और अपने **मन के** आत्मिक स्वभाव में **नये बनते जाओ**, (24) और **नये**

मनुष्यत्व को पहिन लो जो **परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता** और **पवित्रता** में सृजा गया है। (25) इस कारण **झूठ** बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। (26) क्रोध तो करो , पर पाप मत करो ; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे , (27) **और न शैतान को अवसर दो।** (28) चोरी करनेवाला फिर **चोरी न करे,** (29) कोई **गन्दी बात** तुम्हारे मुँह से न निकले (30) परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, 31सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।

सब और प्रत्येक पाप शैतान को एक अवसर तथा खुला द्वार देता है। इसलिए अपने हर पाप को मानने और पश्चताप करने के लिए तत्पर रहें। 1 यूहन्ना 1:9

मत्ती 4:17 उस समय से यीशु ने प्रचार करना आरम्भ किया, "**मन फिराओ** क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।"

शैतान को अवसर देने का उदाहरण : लूका 22:24, 31-34

24उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ कि उन में से कौन **बड़ा** समझा जाता है।

मैं सोचता हूँ शमौन यह कहकर वाद-विवाद जीत गया होगा कि वह पानी पर चला था। ऐसा प्रतीत होता है कि घमंड ने शैतान को अवसर दिया। शैतान नियमों से बंधा है। वह यीशु के पास जाकर अपने वैध अधिकारों को मांगता है। पाप उसका राज्य है। ध्यान दें कि वह शमौन को बिना अनुमति के छू भी नहीं सकता था, शमौन यीशु का था। परन्तु यीशु ने उसकी अनुमति दे दी, शैतान को वैध अधिकार मिल गया। शमौन एक अगुवा था और शैतान ने पतरस के मन में भय डाल दिया और उसने प्रभु का इनकार कर दिया।

31"शमौन, हे शमौन! (पतरस नहीं) देख, शैतान ने तुम लोगों को **माँग लिया है** कि गेहूँ के समान फटके, 32 परन्तु **मैं ने तेरे लिए विनती की**, कि **तेरा विश्वास जाता न रहे;** और जब तू **फिरे** (पश्चाताप करे), तो अपने भाइयों को स्थिर करना।" 33उसने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन् मरने को भी तैयार हूँ।"34उसने कहा, "हे पतरस, मैं तुझ से कहता हुँ कि आज मुर्ग़ बाँग न देगा जब तक **तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा कि तू मुझे नहीं जानता।"**

- रोमियों 10:9 ... अपने मन से विश्वास करे। परमेश्वर मन को देखता है।
- और पतरस ने पश्चाताप किया : 62 और वह बाहर निकलकर फूट-फूट कर रोया।
- पाप शैतान का राज्य है और वह शैतान को वैध अधिकार, अवसर देता है।

- उसने प्रभु का तीन बार इनकार किया और तीन बार उसने यह अंगीकार किया कि वह प्रभु से प्रेम रखता है। यूहन्ना 21:15-17

अपना नया नाम और नया चरित्र प्राप्त करने का उदाहरण:

यूहन्ना 1:42 यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र **शमौन** है : तू कैफा (अरामी भाषा में "**पतरस**") कहलाएगा।

- ❖ उस समय उसने नया जन्म नहीं पाया था।
- ❖ "कहलाएगा" अभी नहीं, भविष्य में। कब?

उसका नाम कब बदला -> जब उसने विश्वास किया :

मत्ती 16:13-19 यीशु अपने चेलों से पूछने लगा, "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"(14) उन्होंने कहा, "कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।" (15) उसने उनसे कहा, "परन्तु **तुम मुझे क्या कहते हो**?" (16) शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (रोमियों 10:9-10)। (17) यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे **शमौन**, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु **मेरे पिता** ने जो स्वर्ग में है, **यह बात तुझ पर प्रगट की है।** (18) और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि **तू पतरस** (पेत्रोस) **है,** और मैं इस पत्थर (पेट्रा) पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। (19) **मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा:** और जो कुछ तू **पृथ्वी पर** बांधेगा (निषेध करेगा), वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू **पृथ्वी पर** खोलेगा (अनुमति देगा), वह स्वर्ग में खुलेगा।" (देखें मत्ती 18:18)

कुंजियाँ पृथ्वी पर इस्तेमाल के लिए हैं ! (भजन 115:16 पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है)

पेत्रोस; एक छोटी चट्टान, एक पत्थर। हम भी "छोटे-छोटे" पत्थर हैं : 1 पतरस 2:5

पेट्रा एक बड़ी चट्टान है।

भजन संहिता 95:1 आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की **चट्टान का जयजयकार करें।**

भजन संहिता 89:26 2 शमूएल 22:3, 47

यीशु > "चट्टान" > "नींव का पत्थर है"

1 कुरिन्थियों 3:11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। मत्ती 7:24 सुनता और मानता / घर चट्टान पर बनाया

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

- एक नया नाम एक नया मन
- एक नया व्यक्ति इफिसियों 4:22-24 "नया मनुष्यत्व"

इफिसियों 4:22-24 तुम पिछले चालचलन के **पुराने मनुष्यत्व को** (शमौन जो तुममें है) जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो और अपने मन के आत्मिक **स्वभाव में नये बनते जाओ**, और नये मनुष्यत्व को (पतरस जो तुममें है) पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की **धार्मिकता** और **पवित्रता** में सृजा गया है।

नया जन्म पाने के बाद **हमारे भीतर** एक नहीं, **दो स्वभाव होते हैं!**

- "**पुराना मनुष्यत्व**" – पुराना पापी स्वभाव – शमौन
  - ✓ स्वयं के लिए जीता है
  - ✓ शरीर द्वारा नियंत्रित होता है
  - ✓ लालसा से प्रेरित होता है
  - ✓ पाप को "हाँ" कहने वाला होता है

- "**नया मनुष्यत्व**" – नया धर्मी मनुष्यत्व – पतरस
  - ✓ दूसरों के लिए जीता है
  - ✓ आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है
  - ✓ प्रेम से प्रेरित होता है
  - ✓ प्रभु को "हाँ" कहने वाला होता है

रोमियों 6:16 . . . क्या तुम नहीं जानते कि जिस की आज्ञा मानने के लिये **तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो**

रोमियों 6:19 जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म (अन्धकार का राज्य) के दास करके सौंपा था, वैसे ही **अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये** (परमेश्वर का राज्य) **धर्म के दास करके सौंप दो।**

मनुष्य स्वरूप यीशु का चित्रण, उसने राज्य में उस समय **प्रवेश किया** जब :

[1] **उसने अपनी बुलाहट का प्रत्युत्तर दिया और अपने परिवार और इस संसार के तंत्र को छोड़ा।** यह उसके बपतिस्मा में प्रदर्शित हुआ – अपने प्रति मृत्यु और अपने स्वर्गीय पिता के प्रति **आज्ञाकारिता।**

[2] तब यीशु ने परीक्षा के समय **शैतान और पाप के लिए "नहीं"** कहा और **अपने पिता के लिए "हाँ" कहा।** फिर बड़े अधिकार के साथ यीशु **आत्मा की सामर्थ्य** से भरा हुआ गलील को लौटा (लूका 4:14 और 18)।

यूहन्ना 8:29 मेरा भेजनेवाला **मेरे साथ** है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि **मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।"**

अब्राहम का चित्रण, [1] उस समय वह **आशीषित हुआ** और उसने राज्य में प्रवेश पाया जब उसने अपनी बुलाहट का प्रत्युत्तर दिया और **परमेश्वर के पीछे चलने** के लिए अपने परिवार तथा इस संसार के तंत्र को छोड़ दिया (उत्पत्ति 12:1-4)। [2] और जब उसने **अपनी आज्ञाकारिता में आगे की ओर एक विशाल कदम बढ़ाया** तो वह **बड़ा आशीषित हुआ** (उत्पत्ति 22:16-19)

> "यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ कि तू ने जो **यह काम किया है** कि अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; 17इस कारण **मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा;** और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश **अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा;** 18और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी : **क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।"**

मत्ती 11:12 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक (हिंसा से) प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन (अपने अधिकार में कर) लेते हैं।

यह पद यह इंगित करता है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने और उसमें बने रहने के लिए संघर्ष भी करना पड़ सकता है, एक ऐसी लड़ाई जो हमारे पुराने स्वभाव और हमारे नए स्वभाव के बीच है।

गलातियों 5:17-26 क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और **आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं;** इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। 18और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।

19**शरीर के काम तो प्रगट हैं,** अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, 20मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, 21डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे **ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।**

22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास,23नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। 25 यदि हम **आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।** 26हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

ऊपर दिया गया परिच्छेद स्पष्ट रूप से एक लड़ाई को दर्शाता है, जो हम सब के लिए परमेश्वर के राज्य में रहने और उसमें बने रहने का संघर्ष है।

लूका 16:16 "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में **प्रबलता से प्रवेश करता है।**

2 कुरिन्थियों 10:4-5 क्योंकि हमारे **युद्ध के हथियार** शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों (गलत विश्वास) को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं। 5हम परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध उठने वाली कल्पनाओं और प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं, और **प्रत्येक विचार को बन्दी बना कर मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।**

यह पद इस बात को स्पष्ट कर देती है कि **युद्ध हमारे मन में है।** हम अपने विचारों को **मसीह की इस इच्छा के अनुरूप** लाने के लिए संघर्ष करते हैं

तेरा राज्य आए। **तेरी इच्छा ...पूरी हो**

रोमियों 6:17 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम **जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए,** जिसके साँचे में ढाले गए थे

निम्नलिखित बातें हमारी सहायता करेंगी कि हम अपने विचारों को प्रभु यीशु मसीह की इच्छा के साथ और उसकी आज्ञाकारिता में ला सकें।

1. प्रत्येक विचार को बंदी बनाने के लिए हमें अपने पुराने पापी स्वभाव और संसार की सोच, तर्क और ज्ञान तथा उसके तरीकों दोनों से युद्ध करने की ज़रूरत होती है।

2. हमें अपने मनों को इस पृथ्वी की वस्तुओं की बजाय **यीशु** तथा स्वर्गीय वस्तुओं **पर लगाए रखने में दृढ़ संकल्प होना चाहिए।**

1 यूहन्ना 2:15 तुम न तो संसार से और **न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो।**

फिलिप्पियों 3:18-20 ... वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। 19उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं और **पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं।** 20पर **हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है**

कुलुस्सियों 3:2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु **स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ**

आत्मा द्वारा नियंत्रित मन जीवन और शान्ति है

रोमियों 8:6-8 शरीर पर **मन** लगाना तो मृत्यु है, परन्तु **आत्मा पर मन लगाना** जीवन और शान्ति है; 7क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न हो सकता है; 8और जो शारीरिक दशा में हैं, वे **परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।**

हमें अपना मन परमेश्वर के वचन से भरा रखना चाहिए

भजन संहिता 1:1-3 क्या ही **धन्य है** वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है! 2परन्तु **वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता;** और **उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।** 3वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये **जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है**

भजन संहिता 19:7-14 **यहोवा की व्यवस्था खरी है,** वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; 8यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर

देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है; 9यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। 10वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं: वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं। 11उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। 12अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर। 13तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वे मुझ पर प्रभुता करने न पाएँ! तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूँगा। 14मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले! और भजन संहिता 119

हमें अपना मन परमेश्वर के वचन से, और उन सब बातों से भरा रखना चाहिए जो आदरणीय, उत्तम और प्रशंसनीय हैं

फिलिप्पियों 4:8-9 इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं **उन पर ध्यान लगाया करो।** 9जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, **उन्हीं का पालन किया करो**, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।

यशायाह 26:3 जिसका मन तुझ में **धीरज धरे हुए हैं,** उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि **वह तुझ पर भरोसा रखता है।**

हमेशा चौकस रहो कि तुम्हारी आँखें क्या देखती हैं और तुम्हारे कान क्या सुनते हैं। पूरी दृढ़ता से इनकार करें :

(1) अपनी आँखों को अभिलाषा का साधन न बनने दें

अय्यूब 31:1 "मैं ने **अपनी आँखों के साथ वाचा बाँधी है**, फिर मैं किसी कुँवारी पर कैसे आँखें लगाऊँ?

1 यूहन्ना 2:16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है।

(2) जो भी व्यर्थ या बुरी वस्तु है ... पुस्तक, पत्रिका, चित्र, टीवी, इत्यादि, उसे अपनी आँखों के सामने रखने से इनकार करें।

भजन 101:3 मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊँगा।

रोमियों 13:14 वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और **शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।**

मत्ती 11:12 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक (हिंसा से) प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन (अपने अधिकार में कर) लेते हैं।

लूका 16:16 "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में **प्रबलता से प्रवेश करता है।**

प्रकाशितवाक्य 12:10-12 फिर मैं ने स्वर्ग से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, "अब हमारे **परमेश्वर का उद्धार** और **सामर्थ्य** और **राज्य** और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया है।[11]वे **मेम्ने के लहू के कारण** और अपनी गवाही के वचन के कारण **उस पर जयवन्त हुए**, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।

www.treasurehisword.com में पृष्ठ 5 पर "टीचिंग नोट्स," के अधीन इस विषय का विस्तारपूर्वक अध्ययन दिया गया है।

शीर्षक : "परमेश्वर के राज्य की कुंजियाँ (Keys to The Kingdom of God)."